V.V.3 D

Paper VI

B.A. II Hons Paper - III History

Q:— Struggle between Sailendras and Cholas.

चोल तथा शैलेन्द्र के बीच संघर्ष के विषय में आप क्या जानते हैं?

INTRODUCTION.

Ans.— ईसा के आठवीं शताब्दी में दक्षिण-पूर्वी एशिया में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना हुई जिसके शासक शैलेन्द्र नाम को धारण किया तथा इसके उद्गम स्थान के विषय में विद्वानों में मतभेद रहा है। चीनी, भारतीय, अरबी तथा स्थानीय लेख इत्यादि के उत्कीर्ण पर प्रकाश डालते हुए भी किसी निश्चित निर्णय पर पहुंचने में असमर्थ हैं। वास्तव में शैलेन्द्रवंश का प्रारम्भिक इतिहास चार-पांच लेखों में ही उपलब्ध है और इन्हीं का आश्रय लेकर हम शैलेन्द्रवंश के इतिहास की रूपरेखा प्रस्तुत कर सकते हैं। यद्यपि अभिलेखों से साबित होता है कि शैलेन्द्र का राज्य बहुत दूर तक फैला हुआ था। इधर दक्षिण भारत में चोल साम्राज्य की विस्तार भी अपनी चरमसीमा पर पहुंची हुई थी। डा० मजूमदार के अनुसार चोल साम्राज्य का विस्तार उत्तर की ओर गोदावरी, दक्षिण में कैलाश नदी तथा पश्चिम में कुर्ग तक था। इसी समय पल्लववंश के उदय होने के कारण चोल साम्राज्य की विजय सीमा अधिक आगे नहीं बढ़ सकी। परन्तु नवीं सदी में परांतक प्रथम सिंहासनारूढ़ हुआ और इसके आगमन से चोल इतिहास ने नया मोड़ लिया। 985 ई० में राजराज महान चोल सिंहासन पर बैठा। इसने अपने पराक्रम से सम्पूर्ण दक्षिण भारत का शासक बन गया। इसके बाद राजेन्द्र चोल ने चोल सीमा गंगा तक पहुंचाया। इसके समय में चोल साम्राज्य उन्नति के चरम शिखर पर पहुंच गया था।

985 ई० में राजराजा महान Chola सिंहासन पर बैठा,

अतः यहाँ पर हमें मुख्य रूप से शैलेन्द्र और चोल शासकों के बीच सम्पर्क तथा संघर्ष के विषय में वर्णन करना है। 11वीं ग्यारहवीं सदी तथा शैलेन्द्र राज्य कीर्तित हुआ संघर्ष भारतीय तथा बृहत्तर भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है। 11वीं सदी के प्रारम्भिक दिनों में चोल तथा शैलेन्द्र राजाओं के बीच मित्रतापूर्ण सम्बन्ध था। इसकी पुष्टि अभिलेखिक साक्ष्यों से होती है। शैलेन्द्रवंश के राजा चूड़ामणि वर्मन ने एक बौद्ध विहार का निर्माण नागीपट्टम में करवाया, जिसे आधुनिक भाषा पत्तनका-

11वीं सदी में Cholas & Shailendras में संघर्ष हुआ।

[illegible]

जाता है। इस विहार के देख-रेख के लिए चोल सम्राट राजराज ने एक गाँव को आयदान के रूप में दे दिया था। चूड़ामणि वर्मन इस विहार को अधूरा छोड़कर ही मर गया। उसका पुत्र श्री मारविजय तुंगवर्मन ने इस विहार को पूरा किया। इसका उल्लेख राजराज के लेख में मिलता है।

नालन्दा में प्राप्त ताम्र अभिलेख जो कि देवपाल के समय के 39 वें वर्ष का है। उसमें श्रीविजय के शासक बालपुत्रदेव के अनुरोध पर देवपाल द्वारा पाँच गाँव के दान का उल्लेख है। ऐतिहासिक साक्ष्य राजेन्द्र चोल के लेख से यह भी पता चलता है कि 11 वीं सदी में शैलेन्द्र शासक श्री मारविजय तुंगवर्मन का राज्य उत्तर में कडारम (केडा मलाया) तक फैला था और दक्षिण पश्चिम सुमात्रा के श्रीविजय पर भी उसका अधिकार था।

नालन्दा ताम्रपत्र अभिलेख

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 11 वीं सदी के प्रारम्भिक काल में चोल एवं शैलेन्द्रों के मध्य मधुर सम्बन्ध थे। दोनों देशों में व्यापारिक एवं राजनीतिक बंधुत्व का सूत्रपात हो चुका था। इस समय चोल एवं शैलेन्द्र दोनों अपने-अपने की वृद्धि में संलग्न थे। दोनों साम्राज्य अपनी विस्तारवादी नीति की कल्पना को साकार करने के लिए दृढ़ संकल्पित थे, पर इतिहास सर्वदा से इस कथन का साक्षी रहा है कि जब दो आक्रामक साम्राज्य प्रगति की ओर बढ़ते हुए चरम लक्ष्य की सीमा को स्पर्श करने के लिए कटिबद्ध हो जाते हैं तो उनकी स्पर्द्धा ईर्ष्या में परिवर्तित हो जाती है। ठीक इसी प्रकार की घटना चोल एवं शैलेन्द्रों के मध्य घटित हुई। जिन मधुर सम्बन्धों की कहानी अभी कही जा चुकी है, उसमें विस्फोट हो गया। दोनों शक्तियों को एक दूसरे का प्रतिद्वन्द्वी बना दिया।

मूलतः शैलेन्द्रों एवं चोलों के संघर्ष का कारण क्या था यह कहना तो कठिन है, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि प्रथम आक्रामक चोल ही थे। चीनी साक्ष्यों से ऐसा प्रतीत होता है कि चोलों का यह आक्रमण १०१७ में हुआ था। चीनियों ने उल्लिखित किया है कि १०१७ ई० में एक शिष्टमंडल शैलेन्द्र के यहाँ से चीन गया था। इससे चोल द्वारा किये गये आक्रमण का संकेत

किया है। वैसे तो शैलेन्द्रों के ऊपर चोल आक्रमण की तिथि संदिग्ध है परन्तु राजेन्द्र चोल के अभिलेख जो क्रमशः १०१७, १०१८, १०२२, २३, २४ एवं २५ ई० के हैं। शैलेन्द्रों पर आक्रमण की सूचना देते हैं। तिरुवलगुण्ड से प्राप्त एक अभिलेख में कहा गया है कि राजेन्द्र चोल ने कटाह विजय की तथा समुद्र पार के सभी राजाओं को पराजित किया। इस आक्रमण का विस्तृत वर्णन मजुर के मंदिर से प्राप्त अभिलेख में मिलता है। शैलेन्द्र चोल आक्रमण की सर्वप्रथम प्रामाणिक तिथि तिरुवलगुण्ड अभिलेख की है। इसपर १०१७ ई० तिथि अंकित है। डा० मजुमदार इसी तिथि को प्रामाणिक मानते हैं। लगभग ८ वर्ष के पश्चात यह संघर्ष अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गया। १०२५ ई० में चोल शासक शैलेन्द्रों के ऊपर भयंकर आक्रमण की योजना बनाई। इसका विवरण राजेन्द्र चोल के तंजौर लेख में मिलता है।

वस्तुतः शैलेन्द्रों एवं चोलों के मध्य संघर्ष चोल का प्रारम्भ क्यों हुआ इसका विवरण कठिन है। चोल अभिलेखों से पता चलता है कि व्यापारिक नियंत्रण हेतु ही चोलों ने शैलेन्द्रों पर आक्रमण किया हो। चोल अभिलेख से ऐसा भी प्रकट होता है कि कम्बुज नरेश ने चोल शासक के पास अपना रथ उपहार के रूप में भेजा था, संभवतः कम्बुज शासक ने चोल शासक से संरक्षण की याचना भी की थी। क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि शैलेन्द्रों की बढ़ती हुई शक्ति के समक्ष कम्बुज टिक नहीं पा रहा था। चोल शासक पहले से ही अवसर की प्रतीक्षा में थे ही। उपयुक्त अवसर पाकर उसने कम्बुज की सहायता न करके स्वयं शैलेन्द्रों पर ही आक्रमण कर दिये। अधिक सम्भावना है कि इस प्रयास में उन्हें कम्बुज से भी सैनिक सहायता मिली हो।

राजेन्द्र चोल ने एक विशाल सामुद्रिक प्रयास। शैलेन्द्र शासक के विरुद्ध सेना केडारम के शासक संग्राम विजयोत्तुंगवर्मन ने इस प्रयास का सामना किया। इस संघर्ष में राजेन्द्र चोल विजयी हुआ और संग्रामविजय-तुंगवर्मन बुरी तरह पराजित हुआ। तंजौर लेख से पता चलता है कि इस विजय के परिणाम स्वरूप हाथी, प्रचुर, राजकोष,

विद्याधरतोरणम्, रत्न मणियों के भण्डार—चोल शासक को युद्ध में और लेख में उपाधियों का भी उल्लेख है जिससे चोल साम्राज्य का अधिकार हो गया था। इसके द्वारा श्री विजय, पन्नई, मलैयूर, मयिरुडिंगम, इलंगाशोक, मापप्पालम, वलैप्पन्दूरु, तलैत्तक्कोलम, तामलिंग, इलामुरिदेशम, नक्कावरम, कडारम आदि का उल्लेख चोल शिलालेखों में मिलता है। इन अभिलेखों से यह पता चलता है कि सारे क्षेत्रों पर श्री राजेन्द्र चोल ने दिग्विजय की थी।

उपर्युक्त वर्णित सभी स्थानों का निश्चित जानकारी नहीं प्राप्त हो सकी है। परन्तु हाल के अनुसार इनमें से अधिकांश की स्थिति या तो सुमात्रा में थी अथवा मलाया में।

परन्तु राजेन्द्र चोल का यह सैनिक प्रयास स्थायित्व न प्राप्त कर सका। किन्तु यह तो निर्विवाद सत्य है कि राजेन्द्र चोल ने श्री विजय पर अपना आक्रमण कर संग्राम विजयोत्तुंग को बंदी बनाया। मलय ग्रंथों के अनुसार तमिल शासक राजेन्द्र चोल ने सिंगा-सिंग नदी स्थित गंगानगर का विध्वंस किया। और इसके पश्चात नदी किनारे पहाड़ी पर स्थित गढ़ को जीता और तुमासिक (जिसका बाद में सिंगापुर पड़ा) पर अधिकार कर लिया। राजेन्द्र चोल के आक्रमण के परिणामस्वरूप श्री विजय राज्य जिसका विस्तार मलाया से सुमात्रा तक था संभवतः उसके शासक संग्राम विजयोत्तुंग वर्मन का अन्त था।

सुंगवंश के इतिहास के अनुसार तिलिहुआ (श्रीदेव) नामक शासक ने सन् ई० १०७७ ई० में चीन अपना दूत भेजकर भेजा था जिससे कि मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध कायम हो सके। इससे साबित होता है कि चोल विजय स्थायी रूप से नहीं रह सकी। राजेन्द्र चोल के समय से ही उसके दिग्विजय का ह्रास हुआ। यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है परन्तु तमिल लेखों से राजेन्द्र चोल के वंशजों द्वारा पुनः कडारम में अधिकार करने का उल्लेख मिलता है और राजेन्द्रदेव के सातवें वर्ष (१०६८-६९) के येसलवेरूलेख में उसके कडारम पर अधिकार

तथा वहाँ के शासकों को उसका राज्य पुनः वापस कर देने का उल्लेख है। कोलोत्तुंग चोल के 20 वें वर्ष (1090-91) के लेख में किडार के शासक के दूत राजविद्याधर सामंत और अभिमानोत्तुंग सामंत के अनुरोध पर कोलोत्तुंग ने शैलेन्द्र चूड़ामणी वर्म विहार को प्रदत्त गाँव को कर से मुक्त कर दिया। इससे पता चलता है कि कोलोत्तुंग चोल के समय में दोनों राजाओं में फिर से मित्रता कायम हुई।

उपरोक्त लेख से यह प्रतीत होता है कि वीरराजेन्द्र देव के राज्यकाल से पहले कडारम अथवा केडा के शासक ने पुनः स्वतंत्रता घोषित करली थी और चोल सम्राट को उन्हें फिर से अधीन करना पड़ा। इस विजय में धर्म विजय का अनुसरण किया और कडारम (केडा) के शासक को उसका राज्य पुनः वापस मिल गया। इस तरह शैलेन्द्र तथा चोल शासकों का युद्ध लगभग 50 वर्षों तक चलता रहा। कदाचित भौगोलिक परिस्थितियों तथा यातायात की असुविधाओं के कारण चोल अपना अधिकार मलाया पर कायम न रख सके और उनकी युद्ध पूर्व की विजयाओं का अन्त हुआ।

अस्तु जो भी हो शैलेन्द्र-चोल साम्राज्य के बीच चलने वाली यह लड़ाई इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह चोल साम्राज्य की विशालता तथा विजयेच्छा का परिचय देता है। चोल साम्राज्य के सामुद्रिक बेड़ा की मजबूती तथा साहसों का इतिहासकार दाद देते हैं।

—०—